Hindi Poems and Motivation

Motivation plays a very important role in any person's life. We all need it to keep going and to face the adversities of life in an easy manner. This is the reason why we keep on searching for different sources of motivation. A motivational poem is one such source of inspiration that helps in boosting the enthusiasm and passion to succeed in an individual.



Just as negative talks hampers a person's motivation, a positive and inspiring poem which is full of encouraging words can help in cheering a person and helping them to

run for success.

Since time immemorial, people have
been resorting to poetry to
enthuse and bring out their
latent motivation. And, why not? After

all, it actually helps in enlightening souls as well as inspiring them to reach towards the pinnacle of success.

The best part of these poems such as <u>Koshish Karne Walon Ki</u>

<u>Kabhi Haar Nahi Hoti</u> is that when one learns it by heart, then they can hold on to that inspiring feeling and focus on their

goals by recalling the poem whenever a hardship strikes them. It is, thus, an ongoing form of motivation and not transitory.

With just a few lines of motivational Hindi poems one can find the purpose of one's life stirring, thereby leading to self motivation, like no other means. If we go through the history and



explore the very many
classic Hindi poems gifted
to us by the eminent poets
of yesteryears, then we will

find that poetry speaks to us at a fundamental level, and moulds us to be a better individual. It inspires us, encourages us to face the world and to reach to our ultimate aim.

As a matter of fact, a simple poem can also help in giving our imagination and creativity a boost!

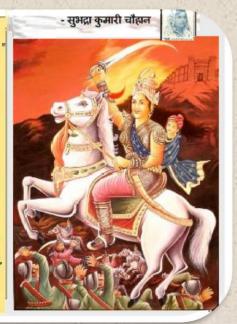
Let's take a look at these stanzas from the famous Jhansi Ki Rani poem, and there is no denying the fact that they will surely stir the hearts of any reader — be it a grown up or a teenager!

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भुकुटी तानी थी, बढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी, गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरगी को करने की सबने मन में ठानी थी। चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हरवोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी, लक्ष्मीवाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी, नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी, बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी। वीर शिवाजी की गायार्थ उसकी याद ज़बानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार, देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार, बकली युद्ध-ट्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार, सैन्य घेरना, दुर्ग तोइना थे थे उसके प्रिय खिलवार। महाराष्टर-कुल-देवी उसकी भी आराष्य मवानी थी, बुंदेते हरवोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।



सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी। चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी, लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी, नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी, बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी। वीर शिवाजी की गाथायें उसकी याद ज़बानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

Even a few lines from the age old poem Veer Tum Badhe Chalo can inspire many within just a few seconds.
वीर तुम बढ़े चलो ! धीर तुम बढ़े चलो !

हाथ में ध्वजा रहे बाल दल सजा रहे ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं वीर तुम बढ़े चलो ! धीर तुम बढ़े चलो !



सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं वीर तुम बढ़े चलो ! धीर तुम बढ़े चलो !

So, why are you waiting to be inspired? Just read these poems on a regular basis and you will definitely find one of the best sources of motivation!